देवबणी री बात

कृपाविस का सामुदायिक जंगल 'देवबणी/ओरण' संरक्षण अभियान

अंक 14 अगस्त 2009

'ग्रामीण आजीविका के तीन धणी कृषि, मवेशी व ओरण/देवबणी'

...कृपाविस का प्रयास

ग्रामीण आजीविका की बेहतरी के लिए कृषि, मवेशी तथा जंगल (ओरण/देवबणी) तीनों के बीच सटीक समन्वयन व उनका समानुपातिक विकास जरूरी है। 'कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान' (कृपाविस) का उद्देश्य भी इन तीनों को समान रूप से आगे बढाने का रहा है। कृषि, पशु पालन सुधार: भू–जल संरक्षण तथा वन (ओरण देवबणी) संवर्द्धन कार्यक्रमों में कृपाविस विशेष भूमिका बढाते हुए ग्रामीण समुदायों का सहयोगी रहा है। प्राकृतिक संसाधनों के विकास में लोगों के पारम्परिक ज्ञान: विज्ञान और सूझ–बुझ में कृपाविस आस्था रखता है तथा जीवंत परम्पराओं के शोध: प्रलेखन और पुष्टि में कृपाविस अपनी आवश्यक भूमिका समझता है क्योंकि इनमें समाज के टिकाऊ विकास का विकल्प निहित है।

राजस्थान मे पशुपालन पूरी तरह जंगलों (ओरण/देवबणी, गोचर) पर निर्भर है। स्पष्ट है कि समुदायों का विकास तभी होगा जब पशुओं का विकास होगा। इसलिए ओरण/देवबणियों का विकास करना आवश्यक है। जिसे कृपाविस एक अभियान के रूप में चला रहा है। पशुपालन के विकास हेतु कृपाविस का परम्परागत पशु चिकित्सा पद्धति व आधुनिक पद्धति के समन्वित रूप को अपनाकर पशु स्वास्थ्य, टीकाकरण, पशु नस्ल सुधार व संरक्षण जैसे कार्यक्रम चलाये जाते हैं। कृपाविस लगभग प्रतिवर्ष एक माह अवधि का पशु स्वास्थ्य ग्राम स्तरीय कार्यकर्ता प्रशिक्षण का आयोजन करता है। इसमें विभिन्न बिन्दुओं पर जैसे–

KRAPAVIS

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस)

कृपाविस बणी, गांव-बख्तपुरा

पो० सिलीसेढ़, जिला अलवर-301001 (राज.)

ई-मेल:krapavis_oran@rediffmail.com

सम्पादन : अमनसिंह व प्रतिभा सिसोदिया

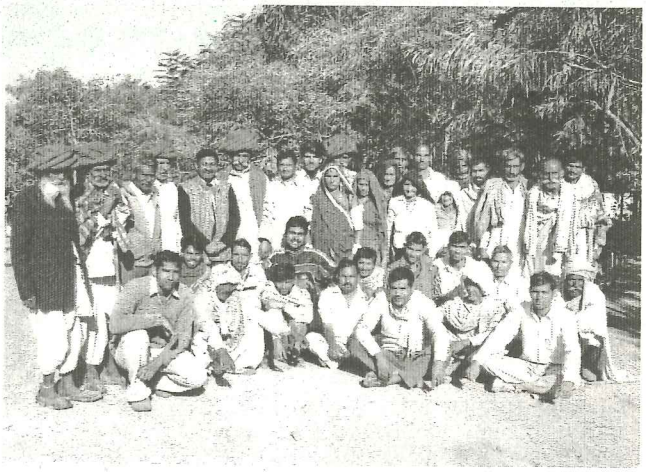

टीकाकरण, पशुस्वास्थ, पशुपालन विकास हेतु चारागाह विशेषकर ओरण/देवबणियों के प्रबंधन व संरक्षण हेतु ग्रामिणों का सहयोग, पशुओं को स्वच्छ खैली–कुओं का निर्माण, पशुनस्ल सुधार, प्रबंधन तथा पशुओं में मौसमी बिमारी व प्राथमिक उपचार, परम्परागत तथा उन्नत विधियों द्वारा समस्या एवं समाधान आदि पर कार्य क्षमता बढाना है।

राजस्थान शुष्क रेगिस्तान राज्य है तथा यहाँ पर वर्षा बहुत कम होती है। आधुनिक तरीके से खेती करने से खर्चा बहुत अधिक आता है तथा टिकाऊ भी नहीं है। कृपाविस द्वारा टिकाऊ कृषि हेतु सधन जागरूकता अभियान चलाया जा रहा है जिसमें टिकाऊ कृषि विकास हेतु इस बात की आवश्यकता प्रतिपादित की जा रही कि किसान रासायनिक खादों की बजाय अधिक से अधिक जैविक खादों, देशी बीजों, कम पानी की फसलों का उपयोग कर खेती की उच्च स्तर की उर्वरा शक्ति एवं पैदावार बनाये रखें। किसानों को अपने ज्ञान का आदान–प्रदान करने हेतु भ्रमण पर ले जाया जाता है। संगठित होकर किस तरह अपने पशुपालन व खेती का सुधार कर सकते है; इस दिशा में कृपाविस द्वारा प्रशिक्षण शिविर आयोजित किये जाते हैं।

'देवबणी री बात' के इस अंक में कृषि, मवेशी तथा व जंगल (ओरण/देवबणी) तीनों को समान रूप से समावेशित करने का प्रयास किया गया है। क्योंकि हम अपने 17 वर्षो के अनुभव पर इस निष्कर्ष पर पहुँचे है कि ''ग्रामीण आजीविका के तीन धणी। कृषि, मवेशी व ओरण/देवबणी।।''

शुष्क कृषि पद्धति में बाजरा एक सर्वोपरि फसल

भारतीय कृषि को अगर मानसून का जुआ कहे तो अतिश्योक्ति नहीं होगी। राजस्थान के परिवेक्ष में खरीब फसल कों खाधान्न; दलहन, तिलहन की आपूर्ति के साथ पशुओं का चारा आपूर्ति हेतु तथा मृदा की उर्वकता को बनाये हेतु देशी प्रजाति बाजरा उगाना चाहिये। देशी बीजों की गुणवत्ता अधिक होती है। देशी प्रजाति का दाना खाने में स्वादिष्ट होता है। तथा बीज खराब नहीं होता है। देशी बीजों का आकार लम्बा व पकने में समय अधिक लेते है। अतः देशी प्रजाति के बीज अधिक उपयुक्त होते हैं।

बाजरा आषाढ़ में पहली बरसात के होने पर बाजरे की बुवाई की जाती है। रेतीली व दुमट मिट्टी मे बाजरे की खेती अच्छी होती है। दुसरी बार खेती में वर्षा का पानी अधिक नही रूकना चाहिए। खेत मे पानी का निकास होना चाहिए। देशी बाजरे को पानी की कम आवश्यकता होती है। अगर बरसात कम भी होती है तो देशी बाजरा पैदा हो जाता है। देशी बाजरे के पौधे की लम्बाई 7 से 8 फुट तक होती है। जो कि पशुओं को चारे के रूप में खिलाते है। इस चारे को पशु अच्छी तरह खाते है और चारा भी अधिक मात्रा में पैदा होता है।

देशी बाजरे की रोटी, खिचडी व राबडी के रूप मे बनाकर खाते है। बाजरा की रोटी खाने में अच्छी लगती है। बाजरा को मुख्य रूप से 4 से साढ़े चार माह तक खाते है। पश्चिमी राजस्थान मे तो 12 मास तक बाजरे की रोटी खाते है। दिवाली के दुसरे दिन गोवर्धन पूजा के दिन प्रातः सुबह हर मन्दिर में बाजरा कड़ी का भोग लगता है ओर सारे गाँव वाले प्रसाद ग्रहण करते है। एक बार कृष्ण भगवान ने इन्द्र देव की पूजा बन्द करवा दी। इससे इन्द्र देव भगवान बहुत अधिक बरसात करने लगे। इससे ब्रजवासी व गाय व्याकुल हो गई। तब श्री कृष्ण भगवान ने अपने नख पर पर्वत धारण किया और पुरे बृजवासी व गाय सब को पर्वत के अन्दर ले लिया। तब इन्द्र भगवान ने देखा कि इस बरसात से जन जीवन पर कोई फर्क नही पड़ा तब इन्द्र भगवान ने आकर कृष्ण भगवान से अपनी गलती का अहसास किया इस उपलक्ष्य में खडी–बाजरा बनाकर भोग लगाते है। उसे अन्नकुट कहते है। लोग आम दिन भी कडी–बाजरा बनाकर खाते हैं क्योंकि कडी–बाजरा बहुत अच्छा लगता हैं।

बाजरा की राबडी का प्रमुख भोजन हैं। बाजरा का दलिया बनाकर भगोने मे पकाया जाता है। फिर शाम को दूध राबड़ी के साथ खाते हैं उसे ब्यालू कहते है और सुबह कलेवा मे छाछ राबडी खाते है उसे कलेवा कहते है। खीचडी–बाजरे को उखल मे कुटकर उस को पकाया जाता है और उसमे चावल डालकर खीचडी पकाई जाती है। फिर उसमे घी शक्कर डालकर खाने से खीचडी बहुत स्वादिष्ट लगती है। इस पर एक भजन भी है

''थाली भरकर लाई खीचडो, ऊपर घी की बाटकी।
जीम्यो म्हारा श्याम धणी, जीमावे बैटी जाट की।।''

बाजरे की रोटी बनाई जाती है और उसको चार माह तक खाते है। सर्दी के मौसम मे बाजरा की रोटी अच्छी लगती है और राजाटी मे ग्वार की सब्जी और बाजरा की रोटी खाने मे बहुत अच्छी लगती है। बाजरे को पशुओं के बीमार होने पर दवाईयों के रूप मे दिया जाता है जैसे–पशु ब्याने पर जेर नही गेरती है। तब बाजरे को उबाल कर पकाने पर उतारकर ठण्डा करके गुड़ मिलाकर पशु को खिलाने से तुरन्त जहर गिरा देता है।

पशु जब जहर मे आता है तो बाजरे का लपटा बनाकर पशु को खिलाते है इससे जहर खत्म हो जाता है। बाजरा का आटा व कडकड शक्कर बनाकर आदमी की बिमारी जैसे–जुकाम मे बाजरा का लपटा बनाकर गर्म–गर्म खाने से जुकाम ठीक हो जाती है। बाजरा सब अनाज मे ताकतवर होता है। बाजरे की रोटी खाकर आदमी कितनी भी मेहनत कर ले तो भी भूख नही लगती है। गाँव मे कहावत हैं कि 'बाजरे की एक रोटी और मक्का की दो रोटी बराबर होती है।' बाजरा चिटियों को प्रिय भोजन होता है। क्योंकि यहां पर लोग बाजरे का आटा पिसकर चिटियों को डालते है। चिटियाँ इसको आसानी से खाती है। बाजरा बारीक होता है इसलिए इसे चिडियाँ आसानी से चुग्ग लेती है। हम देखते है कि ज्वार व बाजरे का खेत पास–पास है परन्तु चिडियाँ ज्वार के खेत मे नही चुगती है और बाजरे के खेत मे बहुत सारी चिडियाँ चुगती हुई दिखाई देती हैं। कृपाविस बाजरे से चारे हेतु प्रदर्शन लगाता व बीज तैयार करता है।

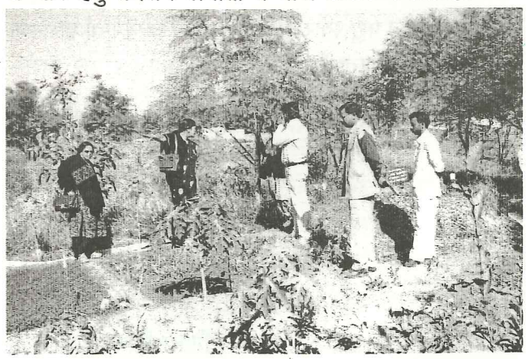

बाजरा के लिए बलुई भूमि जिसमें जल निकास अच्छा हो तथा जीवांश की मात्रा हो सर्वोतम होती है। इसकी बुआयी वर्षा शुरू होने पर की जाती है। बुआयी छिड़काव के साथ ही कतारों में की जा सकती है। कतारों की आपसी दूर 45 सेंमी तथा पौधों की दूरी 10 सेंमी. पर रखते है। बोनी 2–3 सेमी. की गहराई पर की जानी जाहिए।

बाजरा की फसल कम अवधि (90 दिन) है। शुरू की अवस्था में यदि खरपतवरों पर नियंत्रण रखें तो उत्पादन व गुणवत्ता में वृद्धि की जा सकती है। देशी किस्में ही प्रयोग करें। बीज का क्रम उचित स्त्रोत मे ही करें। बीज उन्नति एवं उन्नत होना चाहिए। बीज की मात्रा का निर्धारण जमाव प्रतिशत के आधार पर किया जाता है। 85 प्रतिशत जमाव पर प्रति हेक्टेयर 5–6 कि.ग्रा बीज की आवश्यकता होती है।

डब्यूसीसी–75 यह किस्म वर्ष 1982 में पूरे भारतवर्ष हेतु संस्तुत की गई थी। इसका पौधा185–210 सेमी. लम्बा होता है। जो 80–85 दिनो से पक्कर तैयार होती है। इसकी औसत पैदावार 18–20 क्वि./हे. है। जवाहर, बाजरा किस्म यह संकुल किस्म अखिल भारतीय सम्नवति कर्मशाला द्वारा वर्ष 1997 से संपूर्ण उत्तरी भारत विशेषकर म.प्र., उ.प्र., राजस्थान एवं महाराष्ट्र में उगाने के लिए उपयुक्त पाई गई है इसके पौधे की ऊँचाई 180–240 सेमी. होती है। किस्म 75–90 दिनों में पकती है। पैदावार 15–24 क्वि./हे. पाई गई है। यह किस्म हरित बाल रोग के लिए निरोधक है।

बाजरे की कडबी पुशओं के लिए चारे के रूप में उत्तम मानी जाती है। बाजरा की खेती मे पशुओं के सड़े हुये गोबर का खाद डालते है। इससे रसायनीक खादो व दवाईयों की आवश्यकता नही होती है। बाजरे के लिए 40 किग्रा फास्फोरस की आवश्यकता प्रति हैक्टयर होती है नत्रजन की आधी एवं फास्फोरस की पूरी मात्रा बुआयी से पूर्व दि जानी चाहिए। शेष नेत्रजन की आधी मात्रा खेत में नमी होने पर बुआयी के 30 दिनों बाद प्रयोग किया जाना चाहिए। शुरू की अवस्था में नींदा नियन्त्रण अति आवश्यक है। जिसके लिए निड़ाई–गुड़ाई आवश्यक है। जिससे 20–25 दिनों बाद शुरू करने से भी नींदा पर नियन्त्रण किया जाता है।

बाजरे में कई प्रकार के कीट एवं व्याध्यिाँ नुकसान पहुचाती है। जिनकी रोकथाम करना आवश्यक है। कंबल कीट (हेयर केटर पिलर)– इसकी इल्लियाँ पत्तियों को नुकसान पहुँचाती है। ग्रासहोपर कडा फडका भी नुकसान पहुँचाता है। डाउनी मिल्डयू (ग्रीन इयर) इस बीमारी का प्रकोप संवेदनशील किस्मों में ज्यादा पाया जाता है। इसकी रोकथाम, देशी किस्मों को उगाकर ही कर सकते है।

भारतीय बाजरा नेटवर्क–मिनी

बाजरा तो बहुत ताकतवर अनाज है फिर भी इसको मोटा अनाज या ग्राम वासियों का खाद्ययान ही क्यों बोला जाता है– जबकी साईज में यह गेहूँ से तो बहुत छोटा होता है फिर भी मोटा आनाज क्यों कहाँ जाता है– क्या इसकों खाने वाले गवार होता है– या वही ग्रामिण होता है। इतिहास में सभी ने बाजरे को प्राचीनकाल में बहुत उपयोगी बताया है पहले बाजरे को सभी खाते थे व देशी बाजरा खाने में स्वादिष्ट और ताकतवर होता है। बिना रासायनिक दवाईयों के पैदा किया जाता है। बीज बैंक कैसे बने? बिना दवाईयों के 5–6 साल तक कैसे सुरक्षित रहता है? देशी तरीके से बिना रासायनिक खाद व दवाईयों के बाजरा कैसे अधिक उगाया जा सकता है? देशी बाजरे की प्रजातियाँ कैसे सुरक्षित रख सकते है? वर्तमान में कुछ ही प्रजातियाँ रह गई सभी प्रकार के बीजों की हम बाजरा आधारित किसानों की कैसे, क्यों, किसलिए व किस प्रकार से सहायता कर सकते है? कैसे बताये या समझायें वास्तव में ही बाजरा बहुत उपयोगी होता है?

उपरोक्त सब पहलूओं को लेकर भारतीय बाजरा नेटवर्क का गठन 2008 में हैदराबाद मे हुआ। जिसका मुख्यालय डी.डी.एस. में रखा गया। इस नेटवर्क के संचालन मण्ड़ल ने कृपाविस सहित देश की अनेकों संस्थाए है। इस नेटवर्क के अधीन राज्यस्तरीय नेटवर्क भी गठित हुए हैं। राजस्थान में भी 'राजस्थान बाजरा नेटवर्क' नामक फोरम बना है। जिसका कार्यालय कृपाविस बणी, बख्तपुरा (अलवर) स्थित परिसर में स्थित है। नेटवर्क ने निम्न माध्यमों से देशी बाजरा संरक्षण की रणनीति बनाई:

1. ***फिल्म दिखाकर***–जहाँ देशी बाजरा अच्छी प्रजाति का है। बिना दवाईयों के ही पैदा हो रहा है। उस क्षेत्र की व उन किसानों की फिल्म बनाकर दूसरे क्षेत्र में दिखाई जाए।
2. ***मण्ड़लों का निर्माण करके***– उन किसानों के मण्डल बनाये जाए, जो इसमें रूचि रखते है। मण्ड़लों का समय–समय पर आवश्यकता अनुसार सहयोग करें।
3. ***उत्पादक क्षेत्रों का निरक्षण***–किसानों को ऐसे क्षेत्रों का निरक्षण कराया जाए जहाँ पर वर्तमान में बाजरा हो रहा है। निरक्षण के दौरान उनको पूरी जानकारी दी जाये।
4. ***बीज बैंको का निर्माण***–किसानों से ही अपने–अपने क्षेत्रों में बीज बैंको का निर्माण करवाया जाये। जिससे क्षेत्रों में देशी बीजो के बारे में लोगो को जानकारी मिले।
5. ***स्कूल व कॉलेज शिक्षा में***–स्कूल व कॉलेजों की शिक्षा में एक पुस्तक अनिवार्य लागू हो। जिससे बच्चों व युवाओं को जानकारी मिले।
6. ***बाजरा विकसित करना***– बाजरा के स्पेशल बाजार विकसित करने पर चर्चा की जावें। यानि क्षेत्रीय स्तर पर क्षेत्रीय बाजार विकसित करना। राज्य स्तर पर राज्यस्तरीय बाजार और एक अर्न्तराष्ट्रीय बाजार विकसित करने की नीति बने।

देशी गाँय –सबके हिताय

हर जीव पर वातावरण का प्रभाव पडता है। इस प्रकार विभिन्न जलवायु वातावरण मे भिन्न–भिन्न प्रकार के रंगों व आकारो में पशु मिलते है। एक रंग तथा एक आकार के पशुओं के समूह को जाति विशेष या नस्ल विशेष कहते है। इस प्रकार हर स्थान, हर देश हर प्रान्त में स्थानिय जाति या देशी जाति भी होती है। अगर हम गोवंश की बात करे तो आप पायेगें कि गायों पर किसी स्थान को वर्षा तापक्रम तथा आर्दता का विशेष प्रभाव पडता है। गायों की अच्छी जातियाँ सुखे स्थानो मे मिलती है। जैस– पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र आदि मे पाई जाती है। वही आसाम, बिहार, बंगाल, उडीसा, केरल में गायों कि जातियाँ आकार मे छोटी तथा वजन मे कम पाई जाती है।

हमारे देश मे राम व लक्ष्मण काल से ही भारत के गावों मे गायों को पालकर ही अपनी रोजी–रोटी पशुपालक कमाते थे। कृष्ण काल से समाज गायों की पूजा करता आ रहा है। इतिहास व धर्म के ग्रन्थ बताते है कि अकेले नन्द बाबा के ही एक लाख गाये थी जिन को कृष्ण व बलराम के साथी ग्वाले चराया करते थे। भगवान श्री कृष्ण समाज सुधारक थे उन का कहना था कि पहले दुध बछडे को पिलाओ ताकि अच्छा सांड व बैल बन सके बाद में अपने बच्चे को खिलाओं और चादू चाओं ताकि बच्चे बलवान बने। लेकिन उस समय भी लोभवश गुर्जरियॉ अपने माथे पर दही व मक्खन की मटकियाँ सिर पर रखकर मथूरा बेचने जाती थी। भगवान श्री कृष्ण उन पर जबरदस्ती कोई टैक्स नही लगा सकते थे। इसलिए वे अपनी मुरली के स्वर संगीत से गोपियों को रोक लेते थे और उन का दही व मक्खन ग्वालों को खिलाते थे व खुद खाते थे। इस प्रकार से अपने गॉव का मक्खन गॉव से बाहर नही जाने देते थे। धर्मशास्त्रों में भजन के द्वारा गाया गया व लिखा गया है कि यसोदा मैया अपने कृष्ण को समझाती है कि :–

"माखन चोरी छोड कन्हैया मैं समझाउँ तोय।
इस लख गईया मै ही करख में नित माखन होय।।

हमारे देश व प्रान्त में आज भी त्यौहारों पर गौ पूजा होती है। पुरे श्राद्वो में 16 दिन गाय को ही भोजन कराया जाता है। मकर संकरात्री व अन्य त्यौहारो पर भी गायो को हरा चारा खिलाया जाता है। गोवर्धन पूजा गाय के बछडे को पूजकर की जाती है। ब्रहस्पति का व्रत करने वाले लोग भी गाय को प्रत्येक ब्रहस्पतिवार को चने की दाल खिलाकर व हल्दी का टिका लगाकर व केला खिलाकर करते है। गोगा अष्टमी को भी गाय का पूजन करके गायों को हरा चारा खिलाकर व गायों को अच्छा पोष्टिक खाना खिलाकर अच्छा दुधव अच्छे बछडे उन से किये जाते है। जिससे अच्छे सांड व बैल बनते है। बैलो से अच्छी खेती होती थी और इन के गोबर की खाद खेतो में डालकर अच्छा अनाज उत्पादन किया जाता था जिससे काफी लाभ मिलता था। पहले हमारे देश व प्रान्त में यातायात का साधन बैलगाडी ही हुआ करता था। खेती के काम में बैल आते थे और उनका गोबर खाद के काम आता था और उनके दुध से दही, मक्खन, मिलता था जिसे मनुष्य अपने भोजन में नित्य काम में लेता आ रहा है।

मनुष्य अपनी पुर्ति के साधन के लिये गायों की व बछडों की सेवा करता था लेकिन आज मशीनरी युग है। इसमें खेत जोतने के लिए आज ट्रैक्टर आ गये है। बैलो के स्थान पर पहले बैलों से फसल का गायटा कर अनाज निकाला जाता था और अब ट्रैक्टरों से थ्रेसर मशीन लगाकर निकाला जाता है और चारा अलग हो जाता है। इसके लिए पैसा तो खर्च होता ही है लेकिन एक दिन के अन्दर पुरे खलियान का अनाज व तूडा खर्च हो जाता था। लेकिन यह तुडा मशीन से निकलता है इसलिए आगे से नुकीला होता है और खाते समय पशुओं के मुख में चुभता है। अगर पशु के मुख में छाले हो तो वह जख्म बना देता है और पशु चारा नही खा पाता है। जब से वैज्ञानिक उपकरण खेती व यातायात के काम आने लगे है तब से समाज में बैलो की उपयोगिता खत्म सी हो गई है और आज के युग मे पशुपालक बछडो को पालना पसंद नही करते है। कुछ पशुपालक ही जो आर्थिक रूप से कमजोर है वो ही बैलो का उपयोग कर रहे है। गाय व बछडे छोटी उम्र में ही सलावट के लिए भेज दिये जाते है।

श्रीमति सुमन बोस ने गायों की दुर्दशा पर अपनी कविता इंतकाम लेती गौ–आत्मा में पीड़ा व्यक्त की है जिसकी चंद पंक्तियां निम्न प्रकार है:

आज इंतक़ाम की रात है और मुझे सबक सिखाने हैं
मानव को, अनेक
मेरी आत्मा को गौवंशो के संग एक हो, गौ आत्मा
हो जाने दो!
ताकि इन्सान के तमाम इन्तजामों और आला–दिमाग
का भरपूर इस्तेमाल कर
बड़ी–बड़ी लारियों में दूर दराज के सभी ढीठ इन्सानों
लल्लु–पंजु सा बांध
देवनार सरीखे विशाल कत्लखानों में उंठा कर ले जाउँ।

इस वैज्ञानिक युग मे गायों की कमी आ गई है। और सिर्फ दुध प्राप्त करने की दृष्टि से ही गायों को पाला जा रहा है। इसमें भी अधिक दुध प्राप्ति के लिये विदेशी गायों को अधिक पाला जा रहा है। इस कारण से जो कृष्ण काल की देशी गायें है। वो लुप्त होती जा रही है उनकी जगह विदेशी गायों ने ले ली है।

हमारे देश में गाय को माता माना गया है और पूज्यनीय माना गया है। इसी कारण बच्चे के पैदा होने से और जिवंत रहने तक हर शुभ कार्य में गाय का पेशाब पंचामृत में मिलाया जाता है और चखा जाता है। हर शुभ कार्य में मकान के आंगन व रसोई में गाय के गोबर का चोका लगाया जाता है। इस कार्य के लिए सिर्फ देशी गायों का ही मलमूत्र काम मे लिया जाता है। प्रत्येक दिन प्रत्येक मनुष्य खाना खाने से पहले गौग्रास अपनी थाली से निकालते है। घर मे माता बहने पहली रोटी गाय के लिये बनाती है।

जिस देश मे गाय को माता कहकर उनकी सेवा की जाती है उस देश मे पैसो की लालसा लेकर अपनी आमदनी को बढाने के लिये विदेशी गायो को पालना अच्छा समझते है। इन्ही मुख्य कारणों से देशी गायों की नस्ल सुधार नही हो पा रही है और धीरे–धीरे उनका विनाश होता जा रहा है। आर्थिक रूप से देखा जाए तो देशी गाय विदेशी गायों से कम पैसो मे मिल जाती है और जितना पैसा गायों की रख–रखाव में पशुपालक खर्च करता है जिनमे उनके लिये कुलर, पंखे तथा अच्छा चारा आदि दिया जाता है। अगर उतना खर्चा देशी गायों पर भी किया जाए तो वो भी अच्छी नस्ल में अच्छा दुग्ध उत्पादन दे सकती है। लेकिन देशी गाय को जंगल में खुला छोड दिया जाता है और शाम को जितना भी दुध देती है निकाल लिया जाता है। उस दुध पर सिर्फ जो थोडा चारा रात्री के लिये डाला जाता है उस के खर्चे के अलावा कोई खर्चा नही होता है। जब की विदेशी गायों को अलग से हरा चारा भरपूर मात्रा मे दिया जाता है। अगर इस खर्चे की कीमत ऑकी जाये तो यह दुध काफी महॅगा बैठता है और जो गाय जंगल में चर कर आई है वह बैगर खर्च किये 3 किग्रा दुध देती है। आज की कीमत 15 रूपये किग्रा की कीमत से वह दुध 45 रूपये होता है। अगर दोनो समय का दुध नापा जाए तो 90 रूपये का होता है। अगर हम विदेशी नस्ल की गायों को रोजाना 90 रूपये का खिलाकर 10 किग्रा दुध लेते है तो कोई लाभ नही होता है।

पूरे देश की गायों की संख्या मे से 7 प्रतिशत गाय राजस्थान में है। राज्य मे कुल सफल आय मे पशुपालन का योगदान 19 प्रतिशत है। अतः देशी नस्लों को बचाने के लिये सरकार व पशुपालन विभागो को इस और प्रयास करना बहुत जरूरी है। विभागो को चाहिए की प्रान्तो की जो नस्ल निर्धारित है उन में से अच्छी गायों को चयनित कर प्रान्त की नस्ल के देशी सांड से कृत्रिम गर्भाधान कराया जावें ताकि उन विदेशी नस्ल को बढावा नही मिले और अपने यहॉ की गायों को दुध बढाने का प्रयास करे। इस के लिये पशुओ की समय पर प्रत्येक बिमारी का टीकाकरण हो। समय पर पशु चिकित्सक द्वारा बीमार होने पर चिकित्सा मिले इस के लिये सार्वजनिक गौशालाओं के प्रबन्धन को सुधारा जावे व उन को आर्थिक सहायता अधिक दी जावें।

कृपाविस अपने पशु पालन विकास कार्यक्रम के तहत मवेशी प्रजाति संरक्षण व सुधार करने हेतु चरवाहा समुदायों को सहयोग करता है। जिनमें प्रमुखयता: देशी गाय, देशी बकरी बत्तीसी व पीली लोहड़ी तथा स्थानीय भैंसे प्रजाति मूंगली के संरक्षण तथा इसकी उन्नत कून्नी नस्ल तैयार करने हेतु मुर्रा नस्ल को भी बढ़ावा देना रहा हैं।

मूंगली नस्ल की भैंसे: इस नस्ल के पशु शरीर में गुदटे आकार के होते है। सींग बड़े होते है। अयन कम विकसित होता है। पर पैर छोटे आकार के होते है। इस नस्ल का उत्पादन स्तर भी कम होता है।

मूर्रा नस्ल: यह शरीर में बडी होती है। सींग गुण्ड़ीदार होते है सींगो के बीच में स्थान बहुत कम होता है। अयन विकसित होता है। गर्दन लम्बी पतली ऑखे बड़ी व चमकदार होती है। पीठ सीधी मजबूत होती है। पूंछ लम्बी ऊपर से मोटी व नीचे से पतली व सफेद बालो के झब्बेदार होती है।

कून्नी नस्ल: यह ए क्रोस ब्रड नस्ल है यह मूंगली नस्ल की मादा और मूर्रा नस्ल का नर आपस में समागम कराने के बाद इसका उद्गम हुआ है।

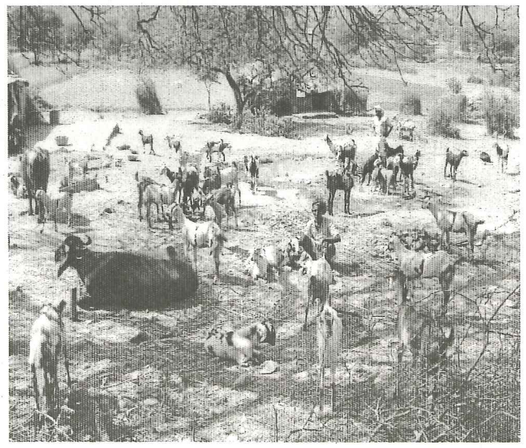

जयवन्ती माता की देवबणी–जहॉ बहुमूल्य जडी–बूटी, घास व धौंक वृक्षों की भरमार

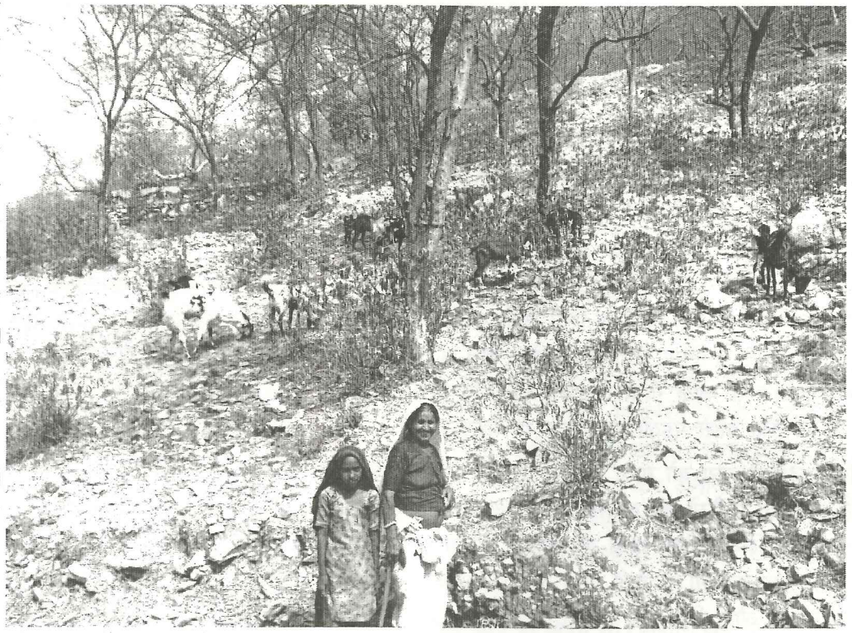

जयवन्ती माता देवबणी जयपुर जिले की विराटनगर तहसील की जोदूला पंचायत के गालावास गॉव में पडती है। गॉव की कुल जनसख्या लगभग 1000 है। कुल परिवारों की संख्या लगभग 150 है। जिसमें अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछडी जाति के लोग निवास करते है। गाव का कुल क्षेत्रफल 1900 बीघा है जिसमें कृषि भूमि 1400 बीघा और चारागाह व बंजर भूमि 500 बीघा है। यह देवबणी बहुत सघन है और लगभग 500 बीघा में फेली हुई है। देवबणी पर मलकियत अधिकार राजस्व विभाग का है।

देवबणी में कोई भी पेड़ नहीं काट सकता यदि कोई पेड काट भी देता है तो माताजी तुरन्त पर्चा देती है। उदाहरणत जोदुला गाव का सरदारा गुर्जर उसको गॉव वालो ने मना किया लेकिन वह नहीं माना और रोंज में से डाली काटने लग गया फिर पह रोंज में से गिर गया और लग गई। दुसरा इसी गॉव के रामदन मीणा ने देवबणी में से पातडा तोडकर के बकरीयों को चराये और उसकी 8 बकरी मर गई और स्वयं बीमार हो गया 15 दिन तक बीमार रहा फिर उसने माताजी का अखाडा बोला तब वह सही हुआ। देवबणी में जो पेड गिरते उनको साल में एक बार बेचा जाता है इन पेडों को उस गॉव के अलावा कही के भी लोग खरीद सकते हैं। पिछली साल 2008 में 7000 रूपये के बेचे थे। इन रूपयो को देवबणी व मन्दिर के विकास कार्य में लगाते हैं।

जयवन्ती माता देवबणी से बहुमूल्य जडी–बूटी, घास, चारा–पत्ती आदि प्राप्त होता है। देवबणी में लगभग 11700 पेड है जिनमें धौंक 10,000, नीम 100, रोंज 800, ढाक 50, देशी पापड 200, विलायती बबुल 200, थोर 200, जाल 100, कैर 70, आदि पेड–पौधे हैं। पहले यहॉ पर आम के पेड भी थे। लेकिन बारीस कम होने से दिक्कत लगने लगी और आम के पेड समाप्त हो गऐ। देवबणी पर निम्न पालतू पशु चरते हैं बकरिया 1500, भेड 500, भैस 200, गाय 100, ऊँट 5 है। बडे पशु गाय व भैस वर्ष में 4 महिने चौंमासा मे चारे के लिए पूरी तरह देवबणी पर निर्भर रहते हैं बाकी 8 महिने घर पर ही चरते है। जयवन्ती माता की कहानी भी गुवालों से जुडी बताई जाती है कि जंगल में पहाड पर दो गुवाल माता का गीत गा रहे थे तब अचानक उनको पत्थर हिलने की आवाज आई तो गुवाल डरने लगे तब उन्होंने कहा की मैं देवी हू आप डरे नहीं। फिर उन्होनें बताया कि माताजी पहाड में से प्रगट हुई। लोग माताजी की पूजा करने लगे और तभी से माताजी को मान रहे है। माताजी के पिछले 25 वर्ष से अखण्ड जोत जल रही है। माताजी की सेवा–पूजा मीणा करते हैं और यहॉ पर प्रत्येक रविवार को मेला लगता है, जात्री गीत गाते हुए आते हैं। हर साल रामनोंमी को बडा मेला लगता है।

देवबणी में पाये जाने वाले वन्य प्राणी निम्न है– लंगूर 200, मोर 30, तोता 200, कबुतर 150, जरख 2, बाघ 1, खरगोस 10, रोज 50, सयाल 20, आदि है। 20–30 वर्ष पूर्व यहॉ पर गिद्व, बाघ आदि बहुत अधिक मात्रा में पाये जाते थे। इस देवबणी में पहले से ही एक बाघ भी था वह

हमेशा नवरात्रा में माताजी के मन्दिर में ढोक देकर के जाता है। और यदि देवबणी में से गॉव का कोई गीली लकडी ले आया और गलती से किसी ने उस लकडी को चूला में जला दी तो सुबह होने से पहले बाघ आकर के दरवाजे में खडा होकर के रास्ता रोक देता था और वह वहॉ से तभी जाता था जब माफी मॉगते और माताजी के कुछ बोलते। जंगल की कटाई व शिकार के कारण समाप्त हो गये। वर्तमान में 20–30 वर्ष से जिन जंगली जानवरों में वृद्धि हो रही है निम्न प्रकार है– नीलगाय, लगूर, मोर, तोता, सियार, तितर आदि है। यह सब जानकारी यहॉ के किसान व पशुपालक व सामाजिक कार्यकर्ता राम लाल मीणा, कन्या लाल मीणा, सरदारा मल गुर्जर, माल्या राम मीणा सामाजिक कार्यकर्ता, भौरे लाल व ग्यासी लाल मीणा आदि लोगों ने दी है।

वर्ष 2009 में कृषि एवं परिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) ने माताजी की देवबणी में पुनरोत्थान के कार्यों में सहयोग कर कार्य करवाया है। पक्का चैकडैम और ल्युज बोलडर चैकडैम बनवाये हैं। जिससे माताजी की नदी अधिक दिन बहेंगी तथा किसानों के कुंओ में पानी का लेवल ऊपर आयेगा। जिससे खेती के लिए पानी मिलेगा। जोकि पहले प्राय: कुऑ में पानी सुख चुका है। और देवबणी में पानी होने पर पेड–पोधों की संख्या बढेगी। देवबणी में जल स्त्रोत जोहडा, हैन्ड–पम्प भी है।

वर्तमान में वन समिति देवबणी में पेड–पौधे लगवाने पर विचार कर रही है। इस देवबणी के संरक्षण के लिए गॉव वालों ने एक वन समिति का निर्माण किया गया है इस वन समिति के अध्यक्ष कन्हैया लाल मीणा व उपाध्यक्ष लाला राम मीणा तथा प्रमुख सदस्यों मे कजोढ मल मीण, जगदीश मीणा, मुकेश मीणा, नमानारायण मीणा, ग्यारसी लाल मीणा, रामकिशन मीणा, मुलाराम मीणा, श्रवण लाल मीणा हैं। कृपाविस कार्यकर्ता कमल मीणा व योगेन्द्र सिंह ने वहॉ पर रहकर के कार्य करवाया है।

शहीद बाबा की देवबणी–दूध वाली घाटी

शहीद बाबा की देवबणी अलवर जिले की मालाखेडा तहसील के खरखडा गांव में पडती है। शहीद बाबा का मन्दिर पहाडी पर है। श्री हरफुल मीणा ने बताया कि पहले साधनों का अभाव था और आवश्यक सामान लाने लेजाने के लिए पहाडी में होकर के ही आते–जाते थे। इसलिए पहले पहाडी में होकर के अलवर शहर में दुध ले जाते थे तो सारे रास्ते में दुध फैला रहता था इसलिए इसका नाम दुध वाली घाटी भी है। यहॉ पर हर बृस्पतिवार को मेला लगता है और जात्री आते है। ऐसा कहा जाता है कि शहीद महाराज बबुले के रूप में हमेशा आता और उनको कुछ गलत दिखाई देता तो कुछ भी कर देते थे यानि परेडा में मटकी खाली दिखाई देती तो उसको फेक देता। कमली मीणा ने बताया की पहले की बात है जब मै विवाह होकर के आई थी तब जानकारी नहीं थी बबुला आया और मैने निकाल दी तो बबुला वापिस पलट के आया और सारे घर के सामान को अस्त–व्यस्त कर दिया। बाद में घर वालों ने बताया कि वह तो शहीद बाबा था और कभी भी आ जाता है। शहीद बाबा का इतिहास लगभग 500 साल पुराना माना जाता है पहले यहाँ पर शयद नामक व्यक्ति ने यहॉ पर तप्सया की थी, राम खिलारी ने कहॉ– ऐसा बताया जाता है।

खरखडा की जनसंख्या लगभग 976 है। कुल परिवारों की संख्या लगभग 225 होगी। जिसमें 100 परिवार अनुसुचित जाति के 25 परिवार अनुसुचित जनजाति के, और 100 परिवार पिछडी जाति के है। गॉव का कुल क्षेत्रफल 1059 बीघा है जिसमें कृषि भूमि सिचिंत 327 बीघा, पडत 471 बीघा और चारागाह भूमि 238 बीघा है। शहीद बाबा की देवबणी का कुल क्षेत्रफल 34–35 बीघा है। जिसमें वर्तमान में लगभग 2470 पेड है। जिसमें पापड के 2000, नीम के 20, रोंज के 100, कैर के 50, धोंक के 100 और अडूस्टा के बहुत अधिक है। 20–30 वर्ष पूर्व यहॉ पर धोक, सालर, बास बहुत अधिक मात्रा में थे। गॉव के गिरधारी लाल मीणा ने बताया कि पहले यहॉ पर बहुत अधिक जंगल था। फिर पेड–पौधो को काट दिया। इस देवबणी पर निर्भर वन्य पशु–पक्षी इस प्रकार है खरगोस 100, सयाल10, तोते 50, चिड़िया 1000 आदि वन्य जानवर है। 20–30 वर्ष पूर्व यहॉ पर बाघ, चीता, गिद्ध आदि जानवर बहुत अधिक मात्रा में पाये जाते थे।

यहॉ से देवबणी से एक नाली भी निकलती है उसको नला बोलते है। वह बारीश में बहता है उस पानी को देवबणी में रहने वाले जानवर पीते है और खेती के काम आता है। वर्तमान में कृषि एवं परिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस) ने देवबणी पुनरोत्थान के कार्यों में सहयोग किया। एक पक्का चैकडैम तथा 6 ल्युजबोलडर बनवाये है। नरेगा के तहत भी शहीद वाला जोहडा में कार्य हुआ है। जिससे देवबणी में रहने वाले पशु–पक्षी और गॉव से चरने आने वाले पशुओं को लम्बे समय तक पानी मिल सकेगा। और इन भी कार्यों से नदी अधिक दिन बहेगी जिससे किसानों के कुऑ पानी का लेवल उपर आयेगा। इस ओरण की सम्पूर्ण जानकारी वहॉ के लोगो, पशुपालको, किसानों, सामाजिक कार्यकर्ता और महात्मा ने दी।

देवबणी/ओरण संरक्षण, संवर्धन एवं प्रबधंन पर राज्य स्तरीय कार्यशाला

'कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान' (कृपाविस) व 'ओरण फोरम' ने ओरण देवबणी संरक्षण एवं संर्वधन, प्रबधंन विषय पर दो दिवसीय राज्य कार्यशाला दिनांक 28–29 मार्च 2009 को कृपाविस बणी बख्तपुरा में आयोजित की। जिसमें सरकारी (विशेषकर जंगल व पशुपालन विभाग) के अधिकारियों, स्वयंसेवी संस्थाओं, अकादमिक/ अनुसंधान संस्थाओं व सामुदायिक नेता आदि के 50 लोगों ने भाग लिया। प्रथम सत्र में संस्थान की निदेशक प्रतिभा सिसोदिया ने संस्थान के विभिन्न कार्यक्रमो तथा ओरण देवबणी की कार्यशाला के उद्देश्य व रूपरेखा प्रस्तुत की। ओरण विशेषज्ञ अमन सिंह ने ओरण देवबणियों की प्रदेश स्थिति से अवगत करवाया तथा ओरण देवबणी के विकास में कृपाविस द्वारा पिछले डेढ दशक में किये गए कार्यो का प्रस्तुतीकरण किया। पर्यावरण शिक्षण केन्द्र / यू.एन.डी.पी. की प्रतिनिधि मनीषा चौधरी ने ओरंण देवबणी से समुदायो को होने वाले लाभो के बारे में चर्चा की।

सरिस्का बाघ परियोजना के निदेशक सुनयन शर्मा ने संभागियों को संबोधित करते हुए कहा कि सरिस्का भी एक तरह से अनेको देवबणियों का एक समन्यवित रूप है इसलिए सरिस्का को देव भूमि कहा जाता है। सहायक वन संरक्षक एल.पी. शर्मा ने देवबणियों में पाये जाने वाले वन्य जीव, वनस्पतियों प्रजातियो पर प्रकाश डाला। इसी सत्र में राजस्थान विश्वविद्यालय के डॉ. आर.ए. शर्मा ने ओरण में पाए जाने वाले औषधिय पादपो की विस्तार से चर्चा की। भरतपुर से आये वैध रामबाबु पाठक ने ओरण देवबणियो में पाय जाने वाली जडी बूटीयों पर चर्चा की।

विकास अध्ययन संस्थान के डॉ. पुरनेंदू कावूरी ने ओरण देवबणी के घासो में आये बदलाव तथा उन पर निर्भर पशुओं संबन्धित परिकल्पना प्रस्तुत की। लीड इंडिया की निदेशक प्रज्ञा वर्मा ने ओरणो व जलवायु परिवर्तन के संबन्ध पर प्रकाश डाला। जयपुर जिले के जगबीर सिंह व केदार श्रीमाल ने ओरण देवबणी व सामुहिक संसाधनो को समाज कैसे संरक्षित रखता है – इस संदर्भ में प्रस्तुति दी। जैसलमेर से पधारे रामस्वरूप विश्नोई, चन्दन सिंह ने जैसलमेर में औरणो की स्थिति से संभागियों को अवगत कराया। भादरीया गावं का ओरण के बाद जो राजस्थान का सबसे बडा ओरण माना जाता है। वहाँ से आये समभागियों ने बताया कि किस तरह से ओरणों की जमीन पर कम्पनियां, खनन, पवन चक्की आर्मी रेंज आदि स्थगित कर ओरणो पर अतिक्रमण कर रहे है। पशुपालन विभाग के डॉ. सीताराम वर्मा ने ओरणो पर पशुपालन कैसे निर्भर है तथा सरकार पशुओं का माइग्रेशन को लेकर विधिवत कार्य योजना बनाती है। अरावली के रिशु गर्ग ने ओरणो को कौन सी नीति व कानून प्रभावित करते है इस पर विस्तार से चर्चा की।

एस.पी.डब्लु.डी. के निदेशक विरेन लोबो ने कहा कि सरकार जिस भूमि को बंजर करती है वह गलत है चुकि राजस्थान मे कोई भी भूमि बंजर नही है वह किसी न किसी रूप में समूदायों के काम आती है बहुत सारे औरणों को भी बंजर भूमि की श्रेणी में डालना सरासर गलत है। कार्यशाला के समापन सत्र में राजस्थान सरकार की पर्यावरण मुंल्याकंन कमेटी के चेयरमेन तथा 'ओरण फोरम' अध्यक्ष प्रोफेसर प्रकाश बाकरे ने बताया कि राज्यपाल एस. के. सिंह की पहल पर राजस्थान के संदर्भ में ओरण व गोचर के विकास हेतु कार्य योजना बनाने के निर्देश दिये।

कार्याशाला के अन्त में एक विस्तृत अनुशंसा सूची तैयार की गई। जिसमें ओरणों के संदर्भ में सरकार को नीतिगत क्या कदम उठाने चाहिए तथा समुदायों व संस्थाओं की क्या भूमिका होनी चाहिए।

कृषि एवं पारिस्थितिकी विकास संस्थान (कृपाविस), बख्तपुरा, अलवर (राज०) द्वारा जनहित में प्रसारित।
इस पत्रिका के लिए सहयोग 'भारतीय बाजरा नेटवर्क/ डी.डी.एस.' से प्राप्त।
मुद्रक: जय बाबा प्रिन्टर्स, स्टेशन रोड़, अलवर। लेआउट सहायक : राकेश सिंह राठौड़